मलेरिया से कितनी मौतें होती हैं?

लैंसेट में प्रकाशित एक पर्चे में सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर कहा गया है कि दुनिया भर में मलेरिया से जितनी मौतें होती हैं उनकी संख्या विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुमान से दुगनी है। जहां विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि दुनिया भर में वर्ष 2010 में मलेरिया से 6,55,000 मौतें हुई थीं वहीं वॉशिंग्टन विश्वविद्यालय के हेल्थ मेट्रिक्स एंड इवेल्युएशन सेंटर के शोधकर्ताओं ने यह आंकड़ा 12 लाख से अधिक बताया है। वैसे कई अन्य वैज्ञानिकों ने इस पर्चे के परिणामों पर संदेह व्यक्त किए हैं।

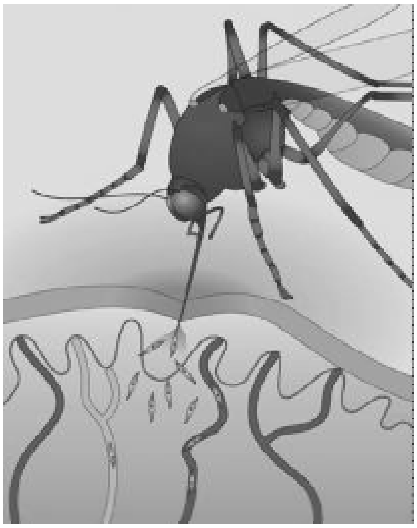

जैसे इस पर्चे की समीक्षा करने वाले कीन्या के बॉब स्नो का मत है कि पर्चे की पद्धति में कई खामियां हैं। उदाहरण के लिए, यह कहा जाता है कि विकासशील देशों में मृत्यु का कारण रिकॉर्ड करने में लापरवाही बरती जाती है या ऐसे रिकॉर्ड उपलब्ध ही नहीं होते। लिहाज़ा वॉशिंग्टन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने 'मौखिक शव परीक्षा' का सहारा लिया। 'मौखिक शव परीक्षा' का मतलब होता है कि मृतक के मित्रों व परिजनों से बातचीत के आधार पर मृत्यु के कारण का निर्धारण किया जाए।

स्नो का मत है कि 'मौखिक शव परीक्षा' बहुत ही मोटा औज़ार है। कई मामलों में यह काफी उपयोगी होता है मगर जब मृत्यु पेचीदा कारणों से हुई हो, तब परिजनों के विचारों के आधार पर मृत्यु का कारण तय करना आपको गुमराह कर सकता है। मलेरिया जैसी बीमारियों के लक्षण काफी मिले-जुले होते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की मलेरिया नीति सलाहकार समिति के अध्यक्ष केविन मार्श भी स्नो से इत्तफाक रखते हैं। उनका कहना है कि 'मौखिक शव परीक्षा' से प्राप्त आंकड़ों को संकेतक मानने की बजाय वॉशिंग्टन विश्वविद्यालय के दल ने उन्हें वास्तविकता का आईना मान लिया है जो सही नहीं है। अब यह तय करना काफी मुश्किल हो सकता है कि किस आंकड़े को सही माना जाए।

दूसरी ओर, शोधकर्ताओं का मत है कि 'मौखिक शव परीक्षा' की पद्धति में दिक्कतें ज़रूर हैं मगर जब और कोई आंकड़े न हों तो यही अच्छा तरीका है।

वैसे इतना तो सब मान रहे हैं कि वॉशिंग्टन विश्वविद्यालय दल ने कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। जैसे, शोधकर्ता कहते हैं कि आम धारणा के विपरीत बड़ी संख्या में वयस्क लोग भी मलेरिया से मरते हैं। इस अध्ययन के मुताबिक मलेरिया से होने वाली कुल मौतों में से 42 प्रतिशत 5 वर्ष से बड़े व्यक्तियों की होती हैं। यह आंकड़ा विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुमान से 8 गुना अधिक है। इसका कारण वे यह बताते हैं कि बचपन में हुए संक्रमणों से प्रतिरोध क्षमता पैदा तो होती है, मगर उतनी नहीं जितना सोचा जाता है।

वैसे एक बात पर सभी सहमत हैं कि मलेरिया से होने वाली मौतों में कमी आई है। वर्ष 2004 में सर्वोच्च स्तर पर पहुंचने के बाद मलेरिया से होने वाली मौतें लगातार कम हो रही हैं। इसका श्रेय विभिन्न वित्तदाता संस्थाओं द्वारा इस बाबत किए जा रहे प्रयासों को दिया जा रहा है। वॉशिंग्टन विश्वविद्यालय दल का मत है कि इन्हीं प्रयासों का एक विरोधाभासी परिणाम यह है कि वयस्कों में मौतें ज़्यादा हो रही हैं - जब बच्चों को प्रभावी ढंग से मलेरिया संक्रमण से बचाया जाता है तो उनमें प्रतिरोध क्षमता विकसित नहीं हो पाती जो वयस्क अवस्था में उनका साथ दे सके। ***(स्रोत फीचर्स)***